किसानों की आवाज का दस्तावेज

cecoedecon

सीमित वितरण हेतु

आवाज...

वर्ष-10 अंक-18 अप्रैल 2021 - मार्च 2022 किसान सेवा समिति महासंघ

आम सभा

KSS आमसभा

भीतर के पन्नों में

1. ये कैसा विकास व समृद्धि ?
2. नदियों को अविरल बहने दो
3. महापुरूषों के पथ चिन्हों पर कब चलेगा समाज?
4. प्रकृति से जितना ले उतना उसे देने का भाव जागे
5. आओ पर्यावरण व कृषि बचाये
6. बांगड़ क्षेत्र का शक्तिपीठ–त्रिपुर सुन्दरी
7. विकास के बढ़ते कदम–दोसरा खुर्द
8. आर्थिक स्थिति हुई सुदृढ़
9. शिक्षा–पर्यावरण की ओर बढ़ते कदम
10. जिनकी यादें शेष है
11. महासंघ ने ज्ञापन दिया
12. पंचायत राज के साथ जी. पी. डी. पी. प्लान–मालपुरा ब्लॉक
13. पंचायत राज के साथ जी. डी. पी. डी. प्लान–निवाई ब्लॉक
14. और पुस्तकालय खुलने की प्रक्रिया शुरू हुयी।
15. मातृत्व का विस्तार
16. घर किसी का जल .....
17. जन संवाद
18. संस्था की गतिविधियां

किसान सेवा समिति महासंघ

(स्वराज कैम्पस), एफ–159–160 सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत क्षेत्र, जयपुर–302022

द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय .....

ये कैसा विकास व समृद्धि ?

आजादी के बाद से ही भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है, रक्षा विज्ञान, तकनीकी, आर्थिक क्षेत्र में भारत ने नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं व समृद्ध भारत का नारा गूंज रहा है। परन्तु कौन समृद्ध? केवल आर्थिक विकास होने से राष्ट्र समृद्ध नहीं होता। मानव के समग्र विकास एवं प्रकृति के संरक्षण में टिकाऊ विकास सम्भव है।

दोनों विषयों पर हम कितने गम्भीर एवं जवाबदेह हैं, विचारणीय है। सन्त का चोला पहने लोग कटघरे में खड़े हो। राजनैतिक क्षेत्र में औद्योगिक घरानों का आर्थिक संरक्षण देकर माननीयों की बोली लगकर सत्ता बदलने का घृणित खेल चल रहा हो, जनादेश महत्वहीन हो जाये। अनुशासित एवं अहिंसात्मक चले किसान आन्दोलन को जाति, धर्म के नाम पर बांटने की साज़िश कर निरंकुश शासक दल एवं मीडिया के एक वर्ग द्वारा उन्हें अलगाववादी घोषित करने में कोई–कसर नहीं छोड़ी गयी हो जो अपनी–अपनी जायज मांगों के लिये 11 महीने सड़कों पर सर्दी–बारिश, धूप सहकर जमे रहे! यह कैसा विकास एवं समृद्धि?

आज बनवासी (सहरिया–भील) आदि जिन्होंने प्राण पण से वनों की रक्षा की। आज वही बनवासी, अपने वनों की वनभूमि के वनों से जल, पेड, जड़ी–बूटियॉं, कन्दमूल, फल व लकड़ियों के स्वामी नहीं रहे। इस वन सम्पदा से करोड़ों वनवासियों को वंचित कर कुछ हजार ठेकेदारों व अधिकारियों के पेट भरे जा रहे हैं। यह है समाज के आखिरी व्यक्ति को समृद्ध व आत्मनिर्भर बनाने की सरकारी नीतियॉं आर्थिक विषमता तीव्र गति से बढ़ रही है। सामाजिक समरसता एवं सद्भाव का ताना–बाना छिन्न–भिन्न हो रहा हो तो क्या कहलायेगा देश समृद्ध या विपन्न विचारणीय है।

दूसरा, विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन कर हम पशु–पक्षी, वनस्पतियां, जल, जमीन, जंगल (जैव विविधता) सबकुछ खोते जा रहे है। पकृति से सम्बन्ध विच्छेद करने को विकास व समृद्धि मान रहे हैं।

शुद्ध जल, शुद्ध वायु व शुद्ध भोजन के अभाव में तथाकथित समृद्धि के पैमाने कीमती जूते, विदेशी कपड़े, पॉच सितारा होटलों का खाना, हवाई यात्रा, शरीर को स्वस्थ नहीं रख सकते। शुद्ध जल, शुद्ध वायु तो कोई मशीन नहीं दे सकती, वह प्रकृति ही दे सकती है। मानव सभ्यता की रक्षा के लिये हमें फिर प्रकृति की ओर लौटना होगा। भारतीय समाज तो प्रकृति पूजक रहा है।

कैसी विडम्बना है, विनाश की चेतावनी सुनने के बाद भी हम विकास का रास्ता बदलने को तैयार नहीं है। नैतिक (चारीत्रिक) बल (सम्पदा) व प्रकृति का संरक्षण कर ही हम सही रूप में समृद्ध कहलायेंगे।

भारत भौतिक विकास के साथ नैतिक मूल्यों, चारित्रिक सम्पदा व पकृति पूजा (पेड, नदी, जल, पर्वत, वनस्पतियॉं) में विश्व का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। परन्तु हम इन क्षेत्रों में कहॉं खड़े हैं। विचारणीय है व आत्म मन्थन करना समय की मांग है।

संरक्षक व मार्गदर्शन :
श्रीमती मंजू जोशी

संपादक :
भगवान सहाय ढाधीच

ग्राफिक्स :
रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

नदियों को अविरल बहने दो

वर्षभर कल–कल ध्वनि करती नीर बहाती सैंकड़ो नदियों का बहना बन्द हो गया है, जो नदियां बह रही है, उन नदियों की अविरल बहती धारा को रोकने से (अनियोजित बांध आदि निर्माण) उसमें रहने वाले जीव–जन्तुओं का जीवन क्रम टूट गया है व उनकी प्रजनन क्षमता प्रभावित हो रही है। जीव–जन्तु वनस्पतियों (जैव विविधता) की अनेक प्रजातियां लुप्त होती जा रही है –

(1) वन नदी के बैंक है, वर्षा का जल संचय कर उसके धीरे–धीरे रिसने से नदियों में पानी की धारा प्रवाहित होती है। वन नदी के भूमि के कटाव को रोकते हैं।

भारत की अधिकांश नदियां या तो बनवासी क्षेत्रों में बहती है अथवा उसके जलग्रहण क्षेत्र का बड़ा हिस्सा (भाग) इसमें आता है। उन्ही वनरक्षकों (बनवासियों) वन, वन्य जीवो (जीवन) पेड– पौधे की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व दांव पर लगाया, सरकारी नीतियों के कारण वनों की रक्षा करने वाले बनवासियों को भक्षक ठहराने के दुष्चक्र चलते रहे है।

विकास के नाम पर वन उजड़ने के कारण नदियाँ भी सिकुड़ गयी है, जबकि होना यह चाहिये वनों की कटाई 100 प्रतिशत प्रतिबन्धित हो, व वनों की सम्पदा एवं उस जल का पहला हक बनवासियों (सहरिया, भील आदि) का हो ऐसे कानून बने, वन बचेगा तो नदियां अविरल बहती रहेगी।

(2) अधिकांश उद्योग नदी एवं बडे जलस्त्रोतों के किनारे स्थापित होते हैं; वे असीमित मात्रा में नदी एवं अन्य जलस्त्रोतों से जल लेते है व सारा कचरा (ठोस–तरल–केमिकल) नदियों में डालते हैं, जिससे पर्यावरणीय प्रदूषण के साथ, पानी भी दूषित हो जाता है, जिससे नदियों में रहने वाले जीव–जन्तु, पेड़–पौधे (जैव विविधता) नष्ट हो रहे है। सम्बन्धित सरकारी अधिकारी वर्ग उद्योगपतियों के प्रलोभन या राजनैतिक दबाव के चलते मात्र खानापूर्ति करते हैं।

(3) नदियों में अवैध खनन आम बात है व नदी के किनारे पर अवैध अतिक्रमणों की बाढ़ सी आ रही है।

इन सबका मूल कारण अंग्रेज काल एवं आजादी के बाद भी शासकों ने नदियों के उद्गम स्थलों व जलग्रहण क्षेत्रों को जहाँ पवित्र एवं पूज्य माना जाता था। नदियों के प्रति श्रद्धा का भाव था, उसे दरकिनार कर उपभोग की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया व विकास की अन्धी दौड़ में नदियों में बहते पानी को प्रदूषित कर अवरूद्ध सा कर दिया। जबकि नदियों के तट पर अनेक संस्कृतियां एवं सभ्यताऐं जन्मी एवं विकसित हुयी।

भारत के अनेक पवित्र एवं गौरवशाली नगर नदियों के किनारे है, पुरातन काल से ही नदी तट (गुरुकुल) शिक्षा के केन्द्र, आध्यात्मिक चिन्तन स्थल व ऋषि–मुनियों की तपोस्थली रहे हैं, नदियां भारत को सींचित एवं पोषित करती रही है,

समाज की अनमोल धरोहर थी यह नदियां। (जलचर प्राणी) जैव विविधता समृद्ध थी। नदियों को पवित्र रखने हेतु वहां के तटवासियों के साथ भारतीय जन–मानस सजग एवं सक्रिय रहते थे, परन्तु अंग्रेजों वाली नीतियों का अनुसरण करने के कारण आजादी के बाद तो नदियों की स्थिति और बदत्तर हो गयी है।

मानवीय पक्ष के साथ दूसरी ओर विश्व में तेजी से जलवायु परिवर्तन हो रहा है, इसका नदियों एवं अन्य जलस्त्रोतों पर प्रभाव पड़ना शुरू हो गया है। धरती का औसत तापमान बढ़ने से दोनों ध्रुवों पर बर्फ पिघलने की गति में असाधारण तेजी आयी है, नदियों के जल का सन्तुलन गड़बड़ा रहा है व समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। बर्फीली पहाड़ियों एवं हिमनद से निकलने वाली नदियों का अस्तित्व बर्फ के ज्यादा पिघलने एवं बर्फ के कम जमने के कारण संकट में आ रहा है।

होना यह चाहिये कि नदी, जलाशयों व छोटे–बड़े जलस्त्रोतों के संरक्षण–संवर्धन हेतु व्यवहारिक उपयुक्त कानून बने, उसके पालन करवाने वाली एजेन्सियों की जवाबदारियां सुनिश्चित हो। कानून–नियमों को तोड़ने वालों पर कठोर दण्ड़ का प्रावधान हो, समुदाय में यह भाव पैदा करने के जन–अभियान चले कि नदियां हमारी पवित्र पूर्वजों द्वारा सम्भलायी गयी धरोहर है, इनका रक्षण एवं पोषण करना हमारा दायित्व है।

नदियां जीवन दायिनी है, भारतीय संस्कृति की पहचान है। हम मां स्वरूप में इसको पूजते है, अराधना करते हैं। इस वात्सल्यमयी मां के नीर को अविरल बहने दो, यही मानव सभ्यता संरक्षित रखने एवं देश हित में है। पर्यावरण मामलों से जुड़ी आई पी सी सी हालिया रिपोर्ट हमारे लिये चेतावनी है। रिपोर्टानुसार (जो 3500 पृष्ठों की है) आने वाले दशको में जलवायु परिवर्तन को अपनाना प्राणी अस्तित्व को बचाने वाली अनिवार्यता होगी। चेतावनी दी है, अगर 2 डिग्री तापमान बढ़ा तो विश्व में करोड़ो मौतें हो सकती है।

महापुरूषों के पथ चिन्हों पर कब चलेगा समाज?

अनुसूचित जाति के दूल्हे की निकासी पुलिस संरक्षण में निकली, अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के साथ सार्वजनिक स्थल मन्दिर, भूमि अतिक्रमण, तालाब, शिक्षा के मन्दिरों में भेदभाव की खबरें आना क्या सन्देश दे रही है? क्यों हमने हमारे पूज्य सन्तों, सन्यासियों, महापुरूषों द्वारा सामाजिक भेदभाव के लिये किये कार्यों को विस्मृत कर दिया, जिन्होंने कर्म एवं भक्ति मार्ग से समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया। वैदिक काल में समाज व्यवस्था में सामाजिक भेदभाव का कोई उल्लेख नहीं हैं। वेद गीता उपनिषद आदि ग्रन्थों में अस्पृश्य शब्द दिखता ही नहीं।

हर कालखण्ड में युग पुरूष, सन्त महात्माओं ने भगवत भक्ति तथा मानव प्रेम, ईश्वर भक्ति के साथ–साथ सामाजिक भेदभाव व कुरीतियों को तोड़कर नई समाज व्यवस्था का व्यवहारिकता से सन्देश दिया। मानव से मानव के बीच भेदभाव पैदा करने वाली दीवारों को ध्वस्त किया। साथ ही इस भक्ति आन्दोलन ने स्त्री–पुरूष के मिथ्या भेद को न केवल अस्वीकार किया, वरन् अनेक महिला सन्तों ने सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया। इन सन्यासियों ने जातिगत विषमताओं व सामाजिक कुरूतियों के विरूद्ध जमकर संघर्ष भी किया।

तमिलनाडू में आलवार एवं नायनवार सन्तों में अनेक वंचित वर्ग के थे, किन्तु ब्राह्मण सन्तों ने इनका शिष्यत्व ग्रहण कर अपने आपको धन्य माना। भक्त नम्मावलवार वंचित वर्ग से थे किन्तु उनके तमिल ग्रन्थ 'प्रबन्धनम्' को वेद के समकक्ष मान्यता मिली। तमिल के ही महान सन्त तिरूवल्लुवर जुलाहा थे, उनके ग्रन्थ तिरूक्कूरल की कविताऐं कुरल नाम से विश्वविख्यात हो गयी।

परमपूज्य चैतन्य महाप्रभु ने अस्पृश्य कहे जाने वाले लाखों लोगों को अपने कृष्ण भक्ति आन्दोलन (हरि बोल – हरि बोल संकीर्तन) से जोड़ लिये, सभी जातियां उनके संकीर्तन के साथ एकरूप हो गयी, सैंकड़ो मुसलमान भी उनके शिष्य हो गये। बंगाल के स्वामी प्रणवानंद ने वंचित वर्ग को परिवारों में सप्रेम भोजन ग्रहण किया व भारत सेवा संघ का निर्माण कर सैंकड़ो सन्यासियों को हिन्दु समाज सामाजिक समरसता कार्य में लगाया।

असम के श्रीमन्त शंकर देव एवं ग्राम–ग्राम श्री माधव देव ने कृष्ण भक्ति को अपने कार्य सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु ग्राम में नामधरों की स्थापना कर डाली, इन नामघरों में सभी समाजों के लोग कृष्ण भक्ति का भजन गाते थे। उसी का परिणाम है, आज असम में जातिगत भेदभाव का कोई स्थान नहीं है।

श्री गुरूनानक देव ने भगवत भक्ति के साथ सामूहिक संगत, सामूहिक पंगत, सामूहिक ठहरने की व्यवस्थाओं (गुरूद्वारो) का चलन प्रारम्भ कर अपने अनुयायियों से सभी प्रकार के सामाजिक भेदभावों को समाप्त कर दिया। गुरू गोविन्द सिंह ने हिन्दू समाज के भेदभावों को समाप्त कर खालसा पन्थ का गठन किया।

मेवाड के राणा परिवार की कुल वधु पूज्या मीरॉ बाई ने काशी के सन्त रैदास को अपना गुरू स्वीकार कर अपने भजनों से पूरे देश में कृष्ण भक्ति धारा को प्रवाहित किया व विष पीकर भी अमर हो गयी। गुजरात के सन्त नरसी मेहता ने अस्पृश्य कहे जाने वाले लोगों के घर कीर्त्तन करने व वहीं प्रसाद ग्रहण करने में संकोच नहीं किया।

कश्मीर की प्रसिद्ध सन्त लल्लेश्वरी वंचित वर्ग से थी, पर भक्ति व शास्त्रार्थ में अपने गुरू से भी आगे निकल गयी। घर–घर बर्तन साफ करने वाली सन्त जना बाई वारकरी मत की श्रेष्ठ सन्त बन गयी। भक्ति भाव में डूबी बीबी नाच्चियार मुलमान होते हुये भी श्री रामानुजाचार्य जी के साथ दक्षिण के मेलुकोट मन्दिर में आ गयी और आज उनकी समाधि भी उस मन्दिर में बनी हुयी है।

स्वामी विवेकानन्द ने गरीब एवं अस्पृश्य कहे जाने वाले लोगों को ईश्वर का साक्षात् अवतार कहकर पुकारा। ऐसे सन्तों – महापुरूषों की लम्बी श्रृँखला है, जिन्होंने सामाजिक भेदभाव एवं सामाजिक कुरूतियों के विरूद्ध अलख़ जगायी। परन्तु कैसी विडम्बना है इन महान सन्तों महापुरूषों के अनुयायी उनके दिखाये सामाजिक समरसता के पवित्र मार्ग से भटक रहे है, जिससे सामाजिक असमानता आज भी समाज को चारों ओर से कुछ हद तक जकड़े हुये है।

राजनैतिक नेतृत्व जो स्वयं धर्म, जाति, क्षेत्र के नाम पर सत्ता के लिये घृणित खेल खेलने में लगा है। समग्र समाज सुधार की इनसे आशा करना निरर्थक है। स्वयं समाज को मानवीय दृष्टिकोण व भावना व राष्ट्रीय सोच के साथ सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनना होगा व पूरे भारतीय समाज को एकसूत्र में बांधने की चुनौती स्वीकार करनी होगी।

प्रकृति से जितना ले उतना उसे देने का भाव जागे

मा. सुरेशजी सोनी (प्रबुद्ध चिन्तक)

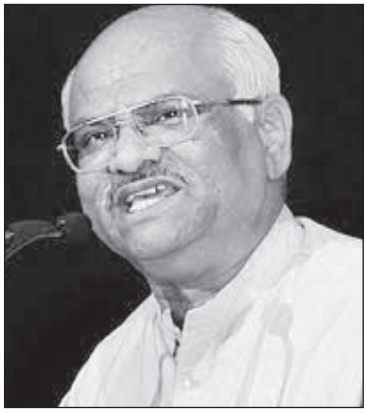

आज गली–मौहल्ले से लेकर संयुक्त राष्ट्र तक पर्यावरण संकट व जलवायु परिवर्तन गम्भीर चर्चा का विषय बना हुआ है, जब विकास की प्रक्रिया चल रही थी, तो विज्ञान और तकनीकी के कारण विकास की गति हमारी कल्पना से अधिक तीव्र गति से होने लगी। धरती रहने लायक नहीं रही तो, धरती को छोडकर आदमी अन्य ग्रहों पर जाने की सोच रहा है। संचार क्रान्ति ऐसी हुयी है कि एक सैकण्ड़ के अन्दर दुनियां में कहीं भी सम्पर्क हो सकता है। आज न्यूक्लियर टेक्नोलोजी में, जीन ट्रान्सप्लांटेशन में, स्पेस में, संसार में हर नया आने वाला दिन एक नयी खोज सामने लाता है।

लेकिन इस चित्र का दूसरा पहलू भी है, जो हमे एक बडे खतरे की ओर संकेत कर रहा है। विकास की प्रक्रिया में हमने क्या कुछ खोया है, उस पर विचार करना जरूरी है, बहुत से लोग जो शोध, अनुसन्धान एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करते हे, उनके आंकडे बताते हैं, कि कार्बन डाई आक्साइड का वायु मण्डल में स्तर पिछले 7.5 लाख वर्ष में इस समय सर्वाधिक है। हर वर्ष 24 बिलियन मिट्टी नष्ट हो रही है, विकास की इस यात्रा में लगभग 10 करोड़ एकड़ कृषि भूमि समाप्त हो गयी है। 1.5 करोड़ एकड़ नये मरूस्थल बन गये हैं, बहुत सारी प्रजातियॉ विलुप्त होती जा रही है, समुद्र के पानी में एसिड़ की मात्रा बढ़ रही है। आपदाओं की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। गणना करने वाले कहते हैं कि आज से 2.5 करोड़ साल पहले पृथ्वी का तामान 6 डिग्री बढ़ा था तो 95 प्रतिशत प्राणी समाप्त हो गये थे। विकास की अन्धी दौड़ ऐसे ही चलती रही तो हो सकता है इस सदी या आने वाली सदी तक हम भी इस स्तर तक पहुंच जाये और तब शायद जीवन के अस्तित्व का संकट खड़ा हो जायेगा।

हमारे पतन का एक मौलिक कारण यही है कि हम यह मान बैठे हैं कि सारी सृष्टि मेरे लिये है। सारी सृष्टि में हम चार प्रकार की दुनियां देखते है, पशु–पक्षी की दुनियां, वनस्पति, पेड़–पौधों की दुनियां, धरती, वायु आकाश की दुनियां, एक मनुष्य की दुनियां। हमने सबने पढ़ा है, इन सबका एक जीवन–चक्र है, और अगर वह जीवन चक्र टूटेगा, तो सबकुछ उजड़ जायेगा। पेड–पौधे कार्बन डाइ ऑक्साइड़ लेते है और ऑक्सीजन छोडते है, प्राणी ऑक्सीजन लेते है एवं कार्बन डाई आक्साइड़ छोडते है, जिससे जीवन चक्र चलता है। यदि इस जीवन चक्र को असन्तुलित कर दिया जाये, तो सबकुछ गड़बड हो जायेगा। इनमें से एक दुनियां समाप्त कर दो, तो दूसरी दुनियां स्वतः ही नष्ट हो जायेगी।

भारतीय चिन्तन को समझना होगा। आज से 50 वर्ष पहले तक घर की दादी व मॉ घर की छत पर दो मुठ्ठी अनाज ड़ालती थी, इसी सोच के साथ कि अगर यदि कोई पक्षी भूखा होगा तो दाना खा लेगा, हर घर में पक्षियों के लिये पानी का पात्र भी बंधा होता था। भोजन के पहले यह देखा जाता था कि आस–पास में यदि कोई मनुष्य भूखा हो तो पहले उसे भोजन करवाया जाये।

गांव में पशुओं के लिये गोचर भूमि सुरक्षित रखी जाती थी, गोचर भूमि पर कब्जा करना पाप माना जाता था। वहॉ अनैतिक कब्जे हो गये। आज तो पशु–पक्षी की छोडिये गरीब आदमी की भूमि पर कब्जा करते समय हम विचार नहीं करते। आज की जीवन शैली में जो बदलाव आया है वो हमारे पतन का बहुत बड़ा कारण बन रही है। जिसके पास

जितनी ताकत है, वो प्रकृति का उतना ही शोषण करेगा। यह हमारी मानसिकता बदलने की जरूरत है। ये धरती पशु, पेड–पौधे इन सबके प्रति नजरियां बदलने की जरूरत है।

वराह पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में एक पीपल, एक नीम, एक बेर व 10 फूल के पौधे लगाता है, वह कभी नरक में नहीं जाता। महर्षि चरक जी आयुर्वेदाचार्य थे, कहते हैं, कि एक जंगल का विनाश, पूरे राज्य के विनाश के बराबर है, एक जंगल को जीवित करना, राज्य के निर्माण के बराबर है। यह एक दृष्टि देने का प्रयास है कि मैं यदि प्रकृति से कुछ ले रहा हूं, तो मेरा भी प्रकृति के प्रति दायित्व है, दुर्भाग्य से आज विकास की पूरी प्रक्रिया में प्राकृतिक संसाधनों को लेने की बात चल रही है, मगर बदले में प्रकृति को देने के नाम पर भाव शून्य हैं।

दूसरा प्रयास हो, जो हमारी पुरानी बावडियां, कुँए, तालाब है, उन्हें पुनर्जीवित किया जाये। घाना की महारानी वेकोयामा चिआडम ने लिखा था कि इस धरती पर हमारा अधिकार नहीं है, किन्तु इसकी रक्षा का दायित्व हमारा है, दुनियां को छोडते समय हम सोचें कि इस धरती को सुन्दर बनाने में मैंने क्या योगदान दिया। कहीं ऐसा न हो हमारी आने वाली पीढ़ियों को पृथ्वी रहने को ही न मिले।

भारत को ईश्वर ने प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर किया है, यदि हम हमारी सांस्कृतिक विरासत की जड़ों को संरक्षित रखते हुये आगे बढ़े तो विकास को सार्थक दिशा दे सकते हैं।

(भारतीय जीवन दर्शन के सन्दर्भ में पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन – संकट से समाधान की ओर – विषय पर में प्रबृद्ध चिन्तक माननीय सुरेश जी सोनी के उद्‌बोधन– (अंश) आज भी प्रासंगिक है) 6 सितम्बर, 2014 (भोपाल), जिसमें हमें भी सहभागी बनने का सुअवसर मिला।

आओ पर्यावरण व कृषि बचाये

हरित क्रान्ति ने किसानों को कर्ज के बोझ तले दबा दिया था परन्तु किसानों के लिये यह ऋण असहनीय नहीं था, क्योंकि कृषि उत्पादन बढ़ रहा था, लेकिन ज्यों–ज्यों समय बीतता गया, अधिक खाद्यान्न उत्पादन के लिये भूमि को अधिक से अधिक उर्वरक एवं कीटनाशकों की आवश्यकता पड़ने लग गयी।

इसका दुष्प्रभाव वायु, जल व भूमि के साथ–साथ उनकी कीट पतंगों पर पड़ा जो किसानों के लिये लाभकारी थे। कुल मिलाकर कृषि पर्यावरणीय चक्र बिगड़ गया व धीरे–धीरे भूमि का स्वास्थ्य खराब होने लगा, उसकी उत्पादन क्षमता कम होने लगी, जल स्तर गिर गया व प्रदूषित होने लगा है। कृषि उत्पादन चक्र में सहायक अनेक जीव–जन्तु रसायनों के असीमित प्रयोग लुप्त होने के कगार पर है। भूमि की उत्पादकता घटने से लागत मूल्य लगातार बढ़ रहा है। विश्व बाजार की मूल्य प्रतिस्पर्द्धा में भारतीय किसान नहीं टिक पा रहा है। (कैसी विडम्बना है, कृषि ऐसा उत्पादन क्षेत्र है, जिसमें उत्पादक अपने उत्पाद का मूल्य स्वयं नहीं तय करता है) इस समूचे संकट का एक ही समाधान है क्रमशः जैविक खेती को बढ़ावा देना।

जैविक कृषि में लागत मूल्य घट जाता है, क्योंकि अधिकांश आवश्यकताऐं किसान खेत में ही पूरी कर लेता है। इसके अतिरिक्त जैविक खेती श्रम आधारित होने के कारण इस खेती से ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की रोजगार सृजन क्षमता में भी बढ़ोत्तरी होगी। भारत में जैविक कृषि की रफ्तार बहुत धीमी है, दूसरी तरफ विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार लगातार बढ़ रहा है। इसमें यूरोप, अमेरिका, फिनलैण्ड, कनाड़ा, डेनमार्क व स्वीडन जैसे देश प्रमुख हैं।

भारत में भी अनेक स्थानों पर जैविक कृषि के व्यापक उपयोग सफल रहे हैं व जैविक कृषि के प्रति आकर्षण व उत्साह बढ़ रहा है। जैविक प्रयोग से किसानों ने न केवल भूमि पर्यावरण व जल का संरक्षण किया गया है, बल्कि स्वास्थ्य के लिये भी यह लाभकारी रहा है। साथ ही कृषि उत्पादन को शनैः शनैः लाभकारी बनाया है। परम्परागत गौवंश आधारित खेती छोटे व मध्यम किसानों के लिये अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकती है (गोबर–मूत्र) भारत का टिकाऊ विकास (समृद्धि) जैविक कृषि की सफलता से अभिन्न रूप से जुड़ा है।

परन्तु इसके लिये उपयुक्त गुणवत्ता मानक, विपणन तथा निर्यात नीति का होना आवश्यक है, जैविक कृषि के सर्टीफिकेशन का सरलीकरण तथा किसानों का उचित प्रशिक्षण भी जरूरी है। पर्यावरण के अनुकूल पैकेजिंग व विपणन व्यवस्था में केन्द्र व राज्य सरकार का व्यवहारिक सहयोग अपेक्षित रहे। इसके अलावा औषधीय प्रयोग वाली वनस्पतियों की खेती को प्रोत्साहन तथा उनके गुणवत्ता मानकीकरण, विपणन व मूल प्रणाली की समुचित व्यवस्था सरकार भी किसान को साथ लेकर करें। जैविक कृषि जोन की स्थापना हो।

वन भूमि तथा जल संरक्षण को प्राथमिकता देते हुये क्षेत्र व प्रान्त आधारित योजना बनायी जाये। भूमि के स्वास्थ्य, वर्षा के औसत, फसल चक्र का डाटा बनाकर उसके एक समन्वित नेटवर्क का रूप दिया जाये। खेती में ग्रामोद्योग व प्रस्संकरण इकाईयों का विकास किया जाये। जैविक खेती हेतु सरकार व समुदाय (किसान) के समन्वित प्रयास जरूरी है।

बांगड़ क्षेत्र का शक्तिपीठ –त्रिपुर सुन्दरी

बॉसवाड़ा जिला अपने तीर्थस्थलों आध्यात्म केन्द्रों के लिये छोटी काशी के नाम से पहचाना जाता है, सुप्रसिद्ध धार्मिक, श्रद्धा का केन्द्र बागड़ी शक्तिपीठ, त्रिपुर सुन्दरी भी यहॉ हैं।

दोनों नवरात्रों में आध्यात्मक भक्तों का मेला लगता है, त्रिपुर सुन्दरी के मेले में व दर्शनार्थ अपार भक्तगण देश के विभिन्न प्रान्तों से आते है। बॉसवाड़ा नगर से 18 किलोमीटर दूरी पर उमरई गांव के आस–पास पहाड़ियों एवं हरे–भरे वनों के मध्य स्थित है। त्रिपुर सुन्दरी का प्राचीन मन्दिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है।

ऐतिहासिक एवं विशालकाय इस मन्दिर में सिंह पर सवार अट्ठारह भुजाओं वाली त्रिपुरा सुन्दरी को तरतई माता, त्रिपुरा महालक्ष्मी नामों से सम्बोधित किया जाता है, प्रतिमा की अष्टादश भुजाओं में दिव्य आयुध है। इसके प्रजामण्डल में नौ–दस छोटी–छोटी मूर्तियां बिराजमान है, जिन्हें नवदुर्गा तथा दश महाविद्या कहा जाता है। इस प्रतिमा के नीचे ''श्री यन्त्र'' अंकित है। इस मन्दिर के निकटवर्ती क्षेत्र में सम्राट कनिष्क के समय का शिवलिंग है। यहां प्राप्त एक शिलालेखानुसार त्रिड़रारी के पास तीन दुर्ग थे, शक्तिपुरी, शिवपुरी एवं विष्णुपुरी। ऐसी मान्यता है कि त्रिपुर (तीन दुर्ग) दुर्गों की बीच बसने वाले देवी के रूप में त्रिपुरा सुन्दरी नाम रखा गया। यह शिलालेख 1540 का है।

जन श्रुतियों से पता लगता है, कि महाराजा विक्रमादित्य, जगदेव परमार, सिद्धराज आदि महान सम्राट यहॉ शक्ति उपासना के लिये आते थे। शासकों के समय त्रिपुरा सुन्दरी की पूजा की विशेष व्यवस्था थी। पांचाल जाति के लोग इसे

अपनी कुलदेवी मानते हैं। कहा जाता है समय–समय पर मन्दिर का जीर्णोद्धार पाताभाई लुहार एवं चांदा भाई लुहार ने करवाया था।

स्कन्ध पुराण के अनुसार राजा इन्द्रधुम्न ने यज्ञ कर पृथ्वी को दो अंगुल ऊँचा कर दिया था, तब यज्ञाग्नि द्वारा तपती पृथ्वी से पानी चूने लगा। इससे माही नदी का उद्‌गम हुआ। लोकमान्यता है कि बीस हजार छह सौ नदियों के सारतत्व से माही नदी का जन्म हुआ। पृथ्वी के सभी तीर्थों में स्नान करने से जो फल मिलता है, वही फल माही संगम में स्नान करने से मिलता है। वाँगड़ क्षेत्र के बांसवाड़ा, डूँगरपुर जिले के विशेषकर आदिवासी समुदाय के लिये माही नदी मां गंगा नदी का अवतार मानी जाती है।

इस नदी में जिस शनिवार को अमावस्या हो उस दिन स्नान, श्रद्धापूर्वक दान करने का महात्यम अधिक है। इसलिये देवताओं ने जब यह सोचा, कि यदि असुर लोग इस नदी में स्नान कर लेंगें, तो उनका भी उद्धार हो जायेगा। देवताओं ने शक्ति से आराधना की कि वह इस तीर्थ के चारों ओर से सुरक्षा करें। मॉ शक्ति विविध रूपों में प्रकट हुयी, तथा देवर्षि नारद ने त्रिपुरा सुन्दरी नाम से इस मन्दिर की स्थापना करवायी। यह शक्ति आज भी मन्दिरों में विराजमान है।

इस प्रकार शिव–सती जी (पार्वती मां) एवं दक्ष प्रजापति प्रसंग अनुसार जिसमें मॉ सतीजी के शरीर के 51 खण्ड भूतल पर गिरे थे। ये सभी शक्तिपीठ या शक्ति स्थल बने, इनमें मॉ त्रिपुरा सुन्दरी भी एक है। हमारे धर्म ग्रन्थो में त्रिपुरा सुन्दरी नमः का उल्लेख है। त्रिपुरा सुन्दरी में रोजाना भक्तजनों का जमघट रहता है, परन्तु नवरात्रि में तो भक्तजनों की अपार संख्या उमड़ती है।

विकास के बढ़ते कदम – दोसरा खुर्द

माधोराजपुरा (फागी) क्षेत्र का ग्राम है, दोसरा खुर्द। ग्राम में करीब 108 परिवार (बैरवा, राजपूत, बागरिया समाज) निवास करते हैं, ग्राम में आजीविका का प्रमुख स्त्रोत कृषि व पशुपालन है। मानसून की अनियमितता एवं अनिश्चितता के चलते कभी सूखा, अकाल, कभी भारी बारिश से फसल चौपट होना किसानों की नियति बन चुकी थी, जिससे किसानों की आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती रही थी।

1992–93 में सिकोईडिकोन संस्था के कार्यकर्ता दोसरा खुर्द में आये व ग्राम के सभी परिवारों के सदस्यों की चौपाल (आम सभा) हुयी, जिसमें ग्राम विकास समिति का गठन कर श्री घासी राम जी बैरवा को सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया व सभी समाजों के लोग एक दरी पर बैठकर गांव के सुख–दुःख की चिन्ता करने लगे। बैठक में पानी की कमी, फ्लोराइड युक्त पानी, व्यर्थ बहते पानी का उपयोग, पर्यावरण रक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर गहन चर्चा होने लगी।

फिर ग्राम में जल संरक्षण हेतु एनिकट निर्माण का निर्णय संस्था प्रतिनिधियों व ग्राम विकास समिति के सदस्यों के बीच हुआ, जिसमें 10 प्रतिशत राशि ग्रामीणों के श्रमदान सामर्थ्यनुसार आर्थिक सहयोग प्रत्येक परिवार ने एनिकट

का निर्माण किया, जिससे ग्राम में सामाजिक समरसता का भाव बढ़ा। विभिन्न प्रजातियों के पक्षी व पौधे यहां आश्रय पाते हैं, जैव विविधता संरक्षित हुयी है।

एनिकट निर्माण से कुंओ एवं हैण्डपम्पों का जलस्तर बढ़ा है। खारा व फ्लोराइड की मात्रा में भारी कमी आयी है, जिससे आमजन के स्वास्थ्य पर अनुकूल असर पड़ा है। एनिकट के आस–पास क्षेत्र में धरती में नमी, कुंओ का जलस्तर बढ़ने से खाद्यान्न उत्पादन में 40 प्रतिशत इजाफा हुआ है। एनिकट पर पेड लगाये गये हैं। इससे ग्राम खाद्यान्न के रूप में आत्मनिर्भर तो बना ही है; साथ ही खाद्यान्न मण्डियों में बेचने लगे हैं।

श्री घासी राम जी बैरवा बताते हैं कि आय बढ़ने से ग्राम के जीवन स्तर में व्यापक बदलाव आया है। आज ग्राम में 6 सरकारी कर्मचारी बने है तो बालिकाऐं भी उच्च शिक्षा हेतु कॉलेज जाने लगी है। ग्राम में भेदभाव नाम मात्र का भी नहीं है। सभी समुदायों के लोग सुख–दुःख एवं कार्यक्रमों में एक–दूसरे के शरीक होते हैं। मवेशियों की संख्या में वृद्धि हुयी है। ग्राम वालों (ग्राम विकास समिति) के प्रयास से यहां दसवीं तक का विद्यालय क्रमोन्नत हो चुका है। साथ ही ग्रामीणों ने संस्था द्वारा करीबी 150 बीघा भूमि मेडबन्दी करवा जल संरक्षण का कार्य किया।

श्री घासी राम जी बैरवा की सामाजिक कार्यों में रूचि के चलते आप किसान सेवा समिति फागी – चाकसू के उपाध्यक्ष बनाये गये। श्री घासी राम बैरवा बताते हैं श्री शरद जी जोशी, सचिव महोदय सिकोईडिकोन दोसरा खुर्द में दो बार पधारे। उनके व ग्रामीणों से आत्मीय सम्बन्ध बनें। सभी परिवारों के सुख–दुःख के हाल–चाल जानना व सभी समुदायों के बीच खाट पर बैठकर चाय–नाश्ता करना (भेदभाव से ऊपर उठकर) अन्य के लिये प्रेरणा स्त्रोत थे।

श्री बैरवा बताते हैं – श्री शरद जोशी एक महापुरूष थे, जिन्होंने ग्रामों के सर्वांगीण विकास के साथ जातिवाद व छुआछूत खत्म करने का अभूतपूर्व कार्य किया। गरीब व समाज के आखिरी व्यक्ति को भी नेतृत्व व विकास का अवसर देने का सतत प्रयास किया।

1974 में कक्षा 8वीं पास श्री घासी रामजी बैरवा प्रगतिशील किसान भी है। खेती में नवाचार किया। संस्था के विभिन्न कृषि प्रशिक्षणों में भाग लेकर खेती की नयी तकनीक का उपयोग किया एवं संस्था के सहयोग से वर्मी कम्पोस्ट प्लान्ट (जैविक खाद) अपनी कुल 7 बीघा व 2 बिस्वा कृषि भूमि में से एक बीघा में फलदार पौधे अमरूद, गेहूं बीज प्रदर्शन लगाया गया। संस्था ने खेती की सुरक्षा हेतु 40 खम्भे, 7 बण्डल जाली आदि का सहयोग किया, उनके यहां तारबन्दी की कुल लागत रू.50,000 आयी।

एक बीघा में 9 क्विन्टल गेहूं प्राप्त किया एवं 500 मीटर दूरी से पानी लाकर पौधों को पिलाकर अच्छी आय प्राप्त की व 1 लाख 20 हजार की आय प्राप्त की (खर्चा रू.50,000) पशुओं के लिए चारा प्राप्त हुआ। श्री घासी राम जी के द्वारा जैविक खेती कार्य से प्रभावित हो अन्य किसान भी उनका अनुसरण करने लगे हैं।

आर्थिक स्थिति हुई सुदृढ़

रामलाल नायक का जन्म ग्राम दोराई नायकान के एक छोटे से ग्राम मे एक गरीब परिवार में हुआ है। गांव की दूरी ब्लॉक से पश्चिम दक्षिण की ओर 8 किलोमीटर है, जो जयपुर केकड़ी मुख्य सड़क के पास है।

रामलाल नायक एक साक्षर किसान है, जिसकी उम्र 55 वर्ष है परिवार मे 2 लड़के व एक लड़की है । इनके पास मात्र 4 बीघा जमीन है, जिनसे इनकी आजीविका सुनिश्चित नहीं थी। जून, 2021 में संस्था द्वारा गठित ग्राम विकास समिति की बैठक आयेजित की गई, जिसमें आजीविका सुरक्षा गतिविधि के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें स्मार्ट फार्म के तहत किसान की आय बढ़ाने व उसकी आजीविका को कैसे सुनिश्चत किया जा सकता पर बताया गया। जिसमे जैविक खेती को बढ़ावा देने पर चर्चा की गई।

इस किसान से खेती से प्राप्त होने वाली आय के बारे में पूछा गया, जिस पर उसने बताया कि 2 बीघा में बाजरा व 1 बीघा में गेहूं आदि बोते हैं, जिससे पशुओं के खाने के लिए चारा व अनाज हो जाता है एवं कुछ सब्जी लगा लेते है, जिससे परिवार को खाने को सब्जी मिल जाती है।

इसके बाद ग्राम विकास समिति में प्रस्ताव लेकर स्मार्ट फार्म मे इस किसान का चयन किया गया। जुलाई, 2021 में किसान ने 1 बीघा खीरा– ककड़ी लगाई गई, जिसमें उन्होंने नवाचार करते हुए इस ककड़ी की खेती को बेल नुमा पद्धति से किया, जिसमें उसने पाया कि इस तरीके से पैदावार अच्छी हुई एवं ककड़ी में रोग भी कम लगे तथा उत्पादन भी बहुत अच्छा हुआ, जिससे उसने 1 बीघा से 50000 हजार का उत्पादन प्राप्त हुआ, जिसकी संस्था सचिव महोदया श्रीमती मजूं बाला जोशी, संस्था निदेशक श्री पी एम पॉल सर, स्वराज से छीतर जी, केएसएस अध्यक्ष, महासंघ अध्यक्ष, केएसएस सदस्य ने इस स्मार्ट फार्म का अवलोकन किया गया। इसी के साथ संस्था द्वारा एक छोटी फिल्म भी बनाई जा चुकी है।

माह सितम्बर में टमाटर की फसल लगाई गई, जिससे उन्हें 60000 रूपये की पैदावर प्राप्त हुई। इसी के साथ–साथ मिर्च, फलदार पौधे लगाया गया।

शिक्षा–पर्यावरण की ओर बढ़ते कदम

अनेक सामाजिक संगठन एवं सरकारी एजेन्सीज़ अपने–अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण (वृक्षारोपण), ज़ैव विविधता बचाने एवं बालिका शिक्षा (महिला सशक्तिकरण) की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। ग्राम चकवाड़ा की करीब 80 बालिकाऐं (छात्राऐं) प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु नियमित फागी व जयपुर लाईब्रेरी में पढ़ने जाती थी, वहॉ 500 रूपये प्रतिमाह लाईब्रेरी खर्च एवं आने–जाने का किराया खर्च होता था। साथ ही आने–जाने में समय भी लगता था।

ग्राम पंचायत चकवाड़ा के सरपंच महोदया श्रीमती केशर देवी जी ने ग्राम की बालिकाओं की पीड़ा एवं दर्द को समझा एवं इस समस्या के समाधान हेतु ग्राम में बालिकाओं को सभी सुविधाओं युक्त निःशुल्क लाईब्रेरी का शुभारम्भ किया (निजी स्तर पर)। साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु करीब 1000 पौधे (बड़, पीपल, खेज़ड़ी आदि) तालाब, बॉधों की पाल के साथ बन्जर भूमि विकसित करते हुये सघन वृक्षारोपण किया। साथ ही पौधों की देख–रेख व पानी की सुचारू व्यवस्था की। आज अधिकांश पौधे लहलहा रहे हैं।

सरपंच प्रतिनिधि संस्था के युवा मंच एवं गतिविधियों से जुड़े रहे हैं, का कहना है पर्यावरण प्रदूषण की बढ़ती समस्या को देखते हुये ग्राम पंचायत ने ग्राम माधोलाव तालाब में नर्सरी (देश–विदेश के विभिन्न प्रजातियों के पौधों (वृक्षो) लगाने का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा, उसकी स्वीकृति 50 लाख की जारी हो चुकी है। उल्लेखनीय है, माधोलाव तालाब जैव विविधता से सम्पन्न रहा है।

जिनकी यादें शेष है

सम्मानीय मोती सिंह जी (बाबो सा)

किसान सेवा समिति महासंघ के अध्यक्ष ठा. साहब श्री मोती सिंह जी राठौड़ के निधन से किसान सेवा समिति महासंघ ने अपना कुशल नेतृत्व खो दिया। बचपन से ही समाज कार्यों में रूचि रखने वाले चन्दलाई (चाकसू) निवासी श्री राठौड़ सरकारी सेवा से सेवा निवृत्ति के बाद सामाजिक गतिविधियों के चलते चन्दलाई ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष बने। अपनी मेहनत एवं कार्यकुशलता के बल पर आप किसान सेवा समिति चाकसू के अध्यक्ष फिर महासंघ के अध्यक्ष बने एवं संस्था के विजन–मिशन को आगे बढ़ाने हेतु लगन एवं निष्ठा से कार्य सम्पादित किया।

आज वो हमारे बीच में नहीं परंतु उनके किये गये कार्यों से महासंघ कृतघ्न है। वे बाबो सा नाम से सुपरिचित थे। आपने हांगकांग, नेपाल आदि देशों में संस्था का प्रतिनिधित्व किया। लेखा कार्य में निःस्वार्थ भाव से प्रमाणिक कार्य किया है वह एक मिशाल है।

सम्मानीया नाथी माताजी

महिला सशक्तिकरण की प्रखर आवाज एवं किसान सेवा समिति महासंघ की वरिष्ठ सदस्या नाथी देवी जाट (माताजी) के निधन से संस्था को अपूरणीय क्षति हुयी है। सामाजिक कार्यों को करते हुये आप कुम्हारियावास (चाकसू) की ग्राम विकास समिति की अध्यक्ष बनी एवं बन्जर भूमि विकसित हेतु (नर्सरी) वृक्षारोपण अभियान चलाया व महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास का बीड़ा उठाया, जिससे आपकी जल्दी ही ब्यापक पहचान बनी।

हांगकांग में विश्व व्यापार संगठन सम्मेलन के दौरान अपने खरे–खरे ओजस्वी भाषणों (तर्क संगत एवं तथ्यात्मक) से विदेशी पत्रकारों को प्रभावित किया एवं विदेशी प्रेस में छा गयी।

आज वो हमारे बीच में नहीं है। परन्तु उनकी स्पष्ट प्रखर आवाज संस्था के कण–कण में गूंज रही है।

महासंघ ने ज्ञापन दिया

किसान सेवा समिति महासंघ के अध्यक्ष कैलाश गुर्जर, उपाध्यक्ष हरिनारायण सूत्रकार ने माननीय मुख्यमन्त्री महोदय राजस्थान को 16.02.2022 को ज्ञापन प्रेषित कर आमजन एवं किसान हित की निम्नांकित समस्याओं एवं मुद्दों के समाधान का आग्रह किया।

(1) किसानों को आपदाओं व अन्य कारणों से फसल नष्ट हो जाने या खराब हो जाने पर अविलंब गिरदावरी की व्यवस्था सुनिश्चित हो, ताकि समय पर किसानों को फसल खराबा मुआवजा मिल सके व उसकी समुचित मॉनिटरिंग हो।

(2) किसानों की आजीविका कृषि के साथ पशुपालन पर निर्भर है। अतः दूध की फेट रेट बढ़ायी जाये।

(3) चारे के भाव आसमान छू रहे हैं। अतः सब्सिडी पर पंचायत स्तर पर चारा डिपो खोले जाये।

(4) राज्य को जी. एम. फ्री स्टेट घोषित किया जाये, ताकि जैव परिवर्द्धित बीजों से पर्यावरण, जन सामान्य के स्वास्थ्य एवं किसानों की आजीविका पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों से बचा जा सके।

(5) जैविक खेती प्रोत्साहन हेतु जैविक बाजार एवं विशेष कृषि जोन व्यवस्थित रूप से विकसित किये जाये।

(6) प्राकृतिक आपदा यथा अग्निकाण्ड व बाढ़ से होने वाले नुकसान पर राजस्व पटवारी की रिपोर्ट को आधार मानकर पीड़ितों को मुआवजा देने की नीति बने।

(7) राज्य से गोचर भूमि अतिक्रमण मुक्त कर नरेगा से मेडबन्दी, नाडे एवं सेमण घास लगवाने की स्पष्ट पॉलिसी बने, जिससे किसानों की आजीविका व खाद्य सुरक्षा सुनिशिचित हो।

(8) सरकारी समर्थन मूल्य खरीद केन्द्र खोलने हेतु ग्राम सेवा सहकारी समितियों को अधिकृत किया जाये। यह छोटे स्थानीय किसानों के लिये लाभकारी होगा। ये केन्द्र वर्ष भर खुले।

पंचायत राज के साथ जी. पी. डी. पी. प्लान–मालपुरा ब्लॉक

सिकोईडिकोन संस्था द्वारा वर्ष 2021–22 में मालपुरा ब्लॉक की ग्राम पंचायत सिन्धोलिया व चावण्डिया में जेण्डर आधारित ग्राम पंचायत विकास नियोजन पर क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण रखा गया, जिसमें ग्राम विकास समिति सदस्य, किसान सेवा समिति पदाधिकारी, युवा मण्डल एवं ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ग्राम पंचायत प्लान मीटिंग में संस्था निदेशक श्री पी. एम. पॉल सर ने भी भाग लिया। जी. पी. डी. पी. प्लान बैठको में किसान सेवा समिति महासंघ अध्यक्ष श्री कैलाश गुर्जर, कल्याण किसान समिति, मालपुरा ब्लॉक अध्यक्ष श्री राम लाल मेघवंशी, के. एस. एस. के वरिष्ठ सदस्य सीताराम गुप्ता एवं सिकोईडिकोन के प्रहलाद जाट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सिन्दौलिया सरपंच घीसी देवी बैरवा व चावण्डिया सरपंचत सोनी देवी चौधरी की सक्रिय भूमिका रही। दोनों ग्राम पंचायत बैठकों में सहभागियों द्वारा अपने–अपने ग्राम में क्या–क्या समस्याऐं आ रही है। किन मुद्दों एवं मूलभूत आवश्यकताओं की जरूरत है, पर चर्चा की गयी, जिनको आगामी वर्ष की वार्षिक कार्य योजना में जुड़वाया जा सके। बैठक में पेयजल, नरेगा कार्यो में शिथिलता, ग्राम पंचायत बैठकों में महिलाओं की भूमिका, महिला रोजगार, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना। ग्रेवल सड़क, तालाब खुदवाई आदि बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा हुयी। ग्राम पंचायत सिन्धोलिया में 62 कार्यों, चावण्डिया ग्राम पंचायत के 48 कार्यों के प्रस्ताव तैयार किये गये महत्वपूर्ण रहा। इन सभी प्रस्तावों का ग्राम सभा में अनुमोदन करवाकर वार्षिक कार्य योजना के प्लान में जुड़वाया गया।

पंचायत राज के साथ जी. पी. डी. पी. प्लान– निवाई ब्लॉक

वर्ष 2021–22 निवाई ब्लॉक की गुन्सी एवं खणदेवत ग्राम पंचायतों में सिकोईडिकोन संस्था द्वारा जेण्डर आधारित ग्राम विकास नियोजन कार्यशालाऐं आयोजित की गयी। गुन्सी कार्यशाला में किसान सेवा समिति के पदाधिकारी श्री रामगोपाल बलाई, श्रीमती गुट्टू देवी माली संस्था के अर्जुन देव, केदार प्रसाद बैरवा, V.D.C. सदस्य व पदाधिकारीगण, युवा मण्डल, सरपंच महोदया सुनीता देवी बैरवा, पंचायत सचिव श्री राधाकिशन, नोडल प्रभारी सुरेश चन्द बंशीवाल व वार्ड पन्चों की सक्रिय सहभागिता रही तो खणदेवत में किसान सेवा समिति पदाधिकारी श्रीमती पार्वती देवी 5 ग्रामों के ग्राम विकास समिति सदस्यगण, युवा मण्डल सदस्य सरपंच महोदया सीमता देवी बैरवा व वार्डपन्च, तो संस्था के अर्जुन देव एवं केदार प्रसाद बैरवा ने मुद्दों की पहचान एवं समस्याओं को चिन्हित किया व दोनों ग्रामों से गुन्सी से 22 प्रस्ताव खणदेवत से 19 प्रस्ताव तैयार किये गये एवं सभी प्रस्तावों को ग्राम सभा में अनुमोदन करवाया गया।

मुद्दों में नाली निर्माण, बालिका शिक्षा, सी. सी. रोड़, पेयजल समस्या, खेल निर्माण, कचरा पात्र संधारण कार्य, स्वास्थ्य, महिलाओं को रोजगार हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण जैसे प्रस्ताव पारित किये गये।

ओर पुस्तकालय खुलने की प्रक्रिया शुरू हुयी

मालपुरा युवा मन्च के प्रतिनिधि मण्डल ने श्रीमान् उपखण्ड अधिकारी महोदय को ज्ञापन देकर मालपुरा में सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने की मांग की। ज्ञापन में कहा गया कि क्षेत्र के सैंकड़ों विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते है व अनेक के पास घर में पढ़ने की पूर्ण सुविधा नहीं है। ऐसे में युवा छात्र 500–600 रूपये प्रतिमाह खर्च कर नीजि पुस्तकालयों में जाने को मजबूर है। माननीय उपखण्ड अधिकारी महोदय श्री राकेश मीणा ने गम्भीरता से लिया व सम्बन्धित शिक्षा विभाग के अधिकारियों से चर्चा कर राजकीय बालिका विद्यालय में जल्दी ही सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने का निर्णय लिया।

इस हेतु भवन निर्माण के साथ अन्य आवश्यक उपयोगी सामान (कुर्सी, टेबिल, पंखे) आदि की व्यवस्था की रूपरेखा तैयार की गयी। प्रतिनिधि मण्डल में सिकोईडिकोन प्रतिनिधि प्रहलाद चौधरी, ब्लॉक युवा मन्च अध्यक्ष जीतराम चौधरी, उपाध्यक्ष कोमल कँवर, सचिव पूजा चौधरी, विष्णु सैन आदि युवा मन्च कार्यकर्ता मौजूद थे।

मातृत्व का विस्तार

मां की प्रतीक्षा कर रहे एक कुलीन परिवार के बच्चे नाना प्रकार की कल्पना कर रहे थे। कोई कह रहा था, मां हमारे लिये खिलौने लायेगी, कोई कह रहा था हमारे लिये नये कपड़े। तभी सभी ने मां को घर में प्रवेश करते देखा, कमरे में बैठे बच्चों ने मां के थैले की तलाशी लेनी प्रारम्भ कर दी। वे अपनी प्रिय वस्तुओं में खोजने में लगे।

ओह यह क्या, थैले में तो कुछ नहीं निकला, बारी–बारी से सबने प्रश्नों की बौछार लगा दी। मां हमारे लिये मिठाई नहीं लायी। लायी तो थी बेटे परन्तु – – अभी बात पूरी नहीं हो पायी थी कि जिसे बच्चे ने खिलौने की कल्पना की थी वह पूछ बैठा मां मेरे खिलौने का क्या हुआ, खिलौने भी लायी थी बेटे मां ने उत्तर दिया। अब कपड़ों की पूँछ की गयी मां ने उत्तर दिया बेटों मैं सभी वस्तुऐं लायी थी, परन्तु मां के शब्द तीनों–चारों बच्चों द्वारा एकसाथ पूछे गये प्रश्न में दब गये। सभी ने एक स्वर में कहा लायी थी तो कहां है मां, तुम तो सदा सच बोलने के लिये कहती हो, और अब स्वयं झूंठ बोल रही हो।

मां ने कहा मेरे बच्चों यह एक सच्चाई है, मैं तुम्हारी प्रिय वस्तुऐं लायी थी, परन्तु मार्ग में तुम्हारे बहुत से भाई–बहिन मिल गये, उनको सम्पूर्ण वस्तुऐं बांट देनी पड़ी, क्योंकि उन वस्तुओं की उन्हें ज्यादा आवश्यकता थी। मां का स्पष्टीकरण सुन बच्चे समझ गये कि मां ने सड़क पर रह रहे अनाथ, असहाय व निर्धन बालकों को वह सभी वस्तुएं दे दी है, उन्हें मां पर गर्व हुआ।

यह विदुषी महिला थी, हिन्दी जगत की प्रख्यात कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान। उनके हृदय में अपने देश व देशवासियों के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे सेवा भाव, प्रेम, करूणा व सहृदयता की साक्षात् प्रतिमा थी।

घर किसी का जल .....

आदमी ही आदमी को छल रहा है, देख तो – वह घर किसी का जल रहा है।
देखना–वह नग्न शव किसका पड़ा है, कौन वह?खंजर लिये पथ पर खड़ा है।
सनसनाती गोलियां छलनी न कर दे, राम का यह देश संकट में खड़ा है।
आस्तीन में सर्प विषधर पल रहा है, देख तो वह घर किसी का जल रहा है।
पौंछते सिन्दुर हो, जिस मांग के तुम वह तुम्हारी – माँ बहिन बेटी नहीं है।
लूट रही है लाज, जिसकी कौन है वह, निकट से पहचान– अब तू मौन क्यों है ?
आदमी अब आदमी पर चल रहा है, देख तो वह घर किसी का जल रहा है ॥
रूक गयी मारूति सुनकर चीख उसकी, कांपती धरती, गगन खोया हुआ है।
यह सुलगती आग किसको फूंक देगी, देश का सौभाग्य क्यों खोया हुआ है।
बुद्ध की आँखों में अश्रु ढ़ल रहा है, देख तो वह घर किसी का जल रहा है।

जन संवाद

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में मालपुरा, निवाई, फागी, शाहबाद एवं चाकसू से स्थानीय विकास के मुद्दों एवं जन समस्याओं पर क्षेत्र के अधिकारियों व अन्य जन संगठनों के साथ जन संवाद एवं समन्वय कार्यशालाऐं आयोजित की गयी। इनमें आपसी तालमेल से ग्राम स्तर पर विकास की गति को नया आयाम मिले व सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के आखिरी व्यक्ति तक पहुँचे।

कार्यशालाओं में जल संरक्षण, चरागाह अतिक्रमण मुक्त, स्वास्थ्य, कृषि योजनाऐं, बालिका शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, फसल बीमा योजना व सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर विस्तृत चर्चा होकर समस्या(मुद्दे) चिन्हित कर समाधान के सामूहिक प्रयास व सरकार के सहयोग पर चर्चा हुयी।

सरकारी अधिकारियों ने संस्था व किसान सेवा समिति प्रतिनिधियों की समाज कार्य में रूचि को देखते हुए उन्हें सरकार के विभिन्न अभियानों में सरकारी स्तर पर शामिल किया।

प्रशासन ग्रामों की ओर अभियान में संस्था प्रतिनिधि बतौर मा. उपखण्ड अधिकारी जी ने अपनी टीम में शामिल किया। पंचायत समिति स्तर पर पंच सरपंच प्रशिक्षण हेतु संस्था प्रतिनिधियों को दक्ष प्रशिक्षक के रूप में शामिल किया।

संस्था की गतिविधियां

सरकारी अधिकारियों व जनसंगठनों के साथ समन्वय बैठक

कल्याण किसान सेवा समिति व सिकोईडिकोन संस्था द्वारा दिनांक 3 जनवरी, 2022 को महेश सेवा सदन मालपुरा में सरकारी अधिकारियों के साथ एक समन्वय बैठक रखी गई, जिसमें संगठनों से 60 प्रतिनिधि व सरकारी विभाग से अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक राकेश बैरवा, ब्लॉक विकास अधिकारी सतपाल कुमावत, महिला बाल विकास अधिकारी हनुमान गौतम, अतिरिक्त कृषि निदेशक डा. राजकुमारी, ब्लॉक अतिक्ति चिकित्सा अधिकारी डा. नासिर ने भाग लिया।

संस्था से संस्था सचिव महोदया श्रीमती मंजू बाला जोशी, संस्था निदेशक महोदय श्री पी एम पॉल एवं श्री आलोक व्यास ने भाग लिया तो महासंघ अध्यक्ष कैलाश गुर्जर, **K.S.S.** अध्यक्ष राम लाल मेघवंशी सहित **K.S.S.** सदस्यों ने भाग लिया।

बैठक में संगठनो की ओर से ग्राम स्तर समस्याओ पर बात रखी गई, जिसमें सूरजपुरा की विकट सड़क मोड़ पर विशेष जोर दिया गया, जिस पर ब्लॉक विकास अधिकारी सतपाल कुमावत जी ने मोड़ को जल्दी से जल्दी सीधी करवाने पर कहा गया।

अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक राकेश बैरवा द्वारा आवाज दो अभियान व सखी सुरक्षा योजना पर जानकारी दी गई एवं सखी सुरक्षा योजना कार्यकारणी समिति मे संस्था से एक महिला प्रतिनिधि को जोड़ने पर कहा गया।

स्थापना दिवस

किसान सेवा समिति महासंघ

आज़ादी के उपरान्त देश में विभिन्न संगठन अलग–अलग वर्गों के मुद्दों को लेकर किसान, गरीब व वंचितों की आवाज उठा रहे हैं। इसी क्रम में किसानों व गरीबों की आवाज को उठाने के लिए राज्य में अलग–अलग संगठनों में किसान सेवा समिति कार्य कर रही है। किसानों व वंचितों के मुद्दों की राज्य–स्तर पर आवाज़ को मज़बूत करने के लिए 2004 में किसान सेवा समिति महासंघ का गठन हुआ जो सतत् रूप से किसानों, गरीबों, वंचितों, महिलाओं व दलितों की आवाज़ को मज़बूत कर रही है।

महासंघ केवल जड़स्तर के मुद्दों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर ले जाता है अपितु राज्य व राष्ट्र स्तर पर नीतियों को जड़स्तर तक पहुंचाने व मुख्य रूप से क्रियान्वित हेतु कार्य करती है।

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजनाः- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099